पाठ 06- एकांकी: रीढ़ की हड्डी (जगदीशचंद्र माथुर)

प्रश्न-उत्तर

रचना से संवाद - मेरे उत्तर मेरे तर्क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न 1. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है?

(क) शरीर के एक आवश्यक अंग का

(ख) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का

(ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का

(घ) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का

- **उपयुक्तता का तर्क:** रीढ़ की हड्डी शरीर को सीधा और सुदृढ़ रखती है। एकांकी के संदर्भ में यह मनुष्य के स्वाभिमान, स्वतंत्र विचार और नैतिक साहस का प्रतीक है, जो शंकर जैसे पात्रों में बिल्कुल नहीं है.

प्रश्न 2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(क) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर

(ख) पात्रों की भाषा और हास्य पर

(ग) विवाह और अशिक्षा पर

(घ) समाज की अनुचित (रूढ़िवादी) मान्यताओं पर

- **उपयुक्तता का तर्क:** लेखक ने विवाह के बाज़ार में लड़कियों को कमतर आंकने, उनकी शिक्षा को छिपाने और लड़कों को श्रेष्ठ मानने वाली दकियानूसी सामाजिक सोच पर करारा प्रहार किया है.

प्रश्न 3. "घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं" यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है?

(क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता

(ख) अनुभव और विवेक की कमी

(ग) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता

(घ) उदासीनता और एकाकीपन

- **उपयुक्तता का तर्क:** शंकर लड़कियों के हॉस्टल के बाहर आवारागर्दी करते पकड़ा गया था, उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं था और वह पिता के गलत विचारों के आगे दुबका रहता था. यह उसकी चारित्रिक और नैतिक कमज़ोरी को दिखाता है.

प्रश्न 4. "जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है।" उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है?

(क) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना

(ख) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना

(ग) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना

(घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

- **उपयुक्तता का तर्क:** उमा शिक्षा को कोई पाप या चोरी नहीं मानती. उसके लिए शिक्षा वह शक्ति है जो स्त्रियों को अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने, समाज के सामने सच बोलने और स्वतंत्र व तार्किक विचार रखने का साहस देती है.

प्रश्न 5. गोपालप्रसाद और रामस्वरूप में क्या-क्या समानताएँ हैं?

(क) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं।

(ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।

(ग) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं।

(घ) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

- **उपयुक्तता का तर्क:** गोपालप्रसाद वकील होकर भी संकीर्ण सोच रखते हैं और बहू को भेड़-बकरी की तरह तौलते हैं. रामस्वरूप आधुनिक होने का नाटक करते हैं लेकिन समाज के डर से अपनी ही बेटी की उच्च शिक्षा को छिपाकर उसे वस्तु की तरह पेश करते हैं.

प्रश्न 6. इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है?

(क) औपचारिक और शुष्क

(ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण

(ग) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक

(घ) भावुक और संक्षिप्त

- **उपयुक्तता का तर्क:** एकांकी के संवाद अत्यंत सहज, बोलचाल के करीब और हास्य-व्यंग्य से भरपूर हैं, जो समाज की कुरीतियों पर सीधा और गहरा कटाक्ष करते हैं.

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. बाबू रामस्वरूप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रूढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए।

- **उत्तर:** बाबू रामस्वरूप के व्यक्तित्व का अंतर्द्वंद्व एकांकी में कई स्थानों पर प्रकट होता है:
    1. वे अपनी बेटी उमा को उच्च शिक्षा दिलाकर बी.ए. पास करवाते हैं, जो उनकी आधुनिक सोच को दिखाता है. परंतु विवाह तय करने के समय समाज और लड़के वालों के डर से वे इसी शिक्षा को छिपाते हैं और झूठ बोलते हैं कि लड़की केवल मैट्रिक पास है.
    2. वे कमरे में हारमोनियम, सितार और गुलदस्ता सजाकर अपनी प्रगतिशील रुचि का प्रदर्शन करते हैं, परंतु जब उनकी पत्नी कहती है कि उमा पाउडर-क्रीम नहीं लगा रही, तो वे दुखी होकर कहते हैं कि "आजकल की लड़कियों के सहारे तो पाउडर का कारोबार चलता है". वे उमा को एक वस्तु की तरह सजाकर पेश करने के रूढ़िवादी प्रयास का समर्थन करते हैं.

प्रश्न 2. 'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।

- **उत्तर:** एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग अर्थों में आया है:
    1. **शंकर के संदर्भ में (शारीरिक और चारित्रिक कमज़ोरी):** शंकर के लिए यह शब्द उसकी शारीरिक रीढ़ की कमज़ोरी (झुकी कमर) को दिखाता है. साथ ही, यह उसके चरित्र, स्वाभिमान और नैतिक साहस के अभाव का प्रतीक है, क्योंकि उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है और वह अपने पिता की गलत बातों पर भी केवल 'खीसें निपोरता' है.
    2. **उमा के संदर्भ में (नैतिक दृढ़ता और आत्मसम्मान):** उमा के लिए 'रीढ़ की हड्डी' उसकी अडिग चारित्रिक दृढ़ता, स्वतंत्र वैचारिक शक्ति और सामाजिक कुरीतियों के सामने सीधे खड़े होने के साहस का प्रतीक है. वह रीढ़ की हड्डी से युक्त एक आत्मनिर्भर और सशक्त स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है.

प्रश्न 3. "मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं।" प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

- **उत्तर:** प्रेमा की इस सोच से पता चलता है कि तत्कालीन समाज (1939 के आसपास) में स्त्री-शिक्षा के प्रति गहरी उदासीनता और रूढ़िवादिता व्याप्त थी. स्त्रियों की शिक्षा को केवल 'जंजाल' या गृहस्थी के लिए बाधक माना जाता था. समाज का मानना था कि लड़कियों के लिए केवल गिनती सीख लेना, थोड़ी-बहुत हिंदी पढ़ लेना या 'स्त्री-सुबोधिनी' जैसी घरेलू धार्मिक पुस्तकें पढ़ लेना ही पर्याप्त है. लड़कियों को कॉलेज भेजना या बी.ए.-एम.ए. करवाना अनपेक्षित माना जाता था क्योंकि धारणा थी कि इससे लड़कियाँ हाथ से निकल जाती हैं और उनके विवाह में कठिनाई आती है.

प्रश्न 4. लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, तो वह क्या होगा और क्यों?

- **उत्तर:** लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' को शीर्षक इसलिए चुना क्योंकि यह मानव शरीर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है जो उसे सीधा खड़ा रखता है. समाज में गरिमा से जीने के लिए व्यक्ति के पास चारित्रिक दृढ़ता और स्वाभिमान रूपी 'रीढ़ की हड्डी' होना अनिवार्य है.
    - **दूसरा वैकल्पिक शीर्षक:** मैं इस एकांकी का दूसरा शीर्षक **"उमा का स्वाभिमान"** या **"अक्ल के ठेकेदार"** रखना चाहूँगा.
    - **कारण:** "उमा का स्वाभिमान" शीर्षक एकांकी के मुख्य संदेश को पूरी तरह व्यक्त करता है, जो दिखाता है कि कैसे एक शिक्षित लड़की रूढ़िवादी विवाह व्यवस्था की संकीर्णता को तोड़कर अपने मान-सम्मान की रक्षा स्वयं करती है.

विधा से संवाद: एकांकी की पड़ताल

एकांकी के मूल नाट्य तत्वों के आधार पर तैयार की गई विवरणात्मक तालिका:

नाट्य तत्व / बिंदु	एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' के आधार पर प्रामाणिक विवरण
1. एकांकी का नाम	रीढ़ की हड्डी
2. लेखक का नाम	जगदीशचंद्र माथुर
3. पात्र	उमा (लड़की), रामस्वरूप (पिता), प्रेमा (माँ), शंकर (लड़का), गोपालप्रसाद (लड़के का पिता), रतन (घरेलू सहायक).
4. परिवेश / देश-काल	सन् 1939 का तत्कालीन भारतीय समाज, रामस्वरूप के घर का मामूली रूप से सजा हुआ एक कमरा.
5. रंग-निर्देश / मंच-निर्देश	"(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए...)"
6. संवाद-निर्देश	पात्रों के हाव-भाव और बोलने के लहजे का कोष्ठक में निर्देश, जैसे- "(ज़रा तेज आवाज़ में)", "(सकपकाकर)", "(ताव में आकर)".
7. समस्या	स्त्रियों की उच्च शिक्षा के प्रति समाज की रूढ़िगत सोच, विवाह बाज़ार में लड़कियों का वस्तुकरण और लेन-देन की कुरीति.
8. मुख्य विचार	नारी शिक्षा समाज के विकास और उनके आत्मबल के लिए अनिवार्य है; बिना चरित्र और रीढ़ के पुरुष समाज के लिए कलंक हैं.
9. समाधान / परिणाम	उमा द्वारा साहसपूर्वक शंकर और गोपालप्रसाद की पाखंडी सोच को बेनकाब करना। लड़के वाले अपमानित होकर वापस लौट जाते हैं.

मेरी टिप्पणी

प्रश्न: उमा द्वारा शंकर के लिए कही गई बात ("घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं...") पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए.

- **उत्तर (संक्षिप्त टिप्पणी):** उमा की यह टिप्पणी एकांकी का सबसे सशक्त और क्रांतिकारी प्रहार है. यह वाक्य समाज के उस दोहरे मापदंड को चुनौती देता है जो लड़कियों की शिक्षा और गुणों की तो कठोर परीक्षा लेता है, परंतु लड़कों के चारित्रिक खोखलेपन और शारीरिक दुर्बलता को अनदेखा कर देता है. उमा ने 'रीढ़ की हड्डी' (बैकबोन) शब्द का प्रयोग करके शंकर की रीढ़विहीन मानसिकता पर गहरा कटाक्ष किया है—वह लड़का जो लड़कियों के हॉस्टल के बाहर मर्यादा खोता है और अपने पिता की दकियानूसी बातों पर स्वतंत्र विचार न रखकर केवल कायरों की तरह हँसता है, वह समाज को सीधा खड़ा रखने के योग्य बिल्कुल नहीं है. यह टिप्पणी नारी चेतना के स्वाभिमान और तार्किक विजय की उद्घोषणा है.

विषयों से संवाद: तुलना और विचार

प्रश्न 1. एकांकी में उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ एकांकी के पात्रों के व्यवहार में लड़कियों तथा लड़कों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। अब यह भी लिखिए कि आप इस भिन्नता को किस प्रकार समझते हैं?

- **उत्तर:** एकांकी में लिंग-भेद और भेदभाव को दर्शाने वाली मुख्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं:
    1. **गोपालप्रसाद का कुतर्क:** *"अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं... तब तो हो चुकी गृहस्थी। मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं..."*
    2. **रामस्वरूप का कथन:** *"बाप सेर है तो लड़का सवा सेर... कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा।"*
    - **इस भिन्नता पर मेरी समझ:** यह भिन्नता पुरुष-प्रधान समाज की उस संकीर्ण और अहंकारी सोच को दिखाती है जो पुरुषों को ऊँची तालीम, राजनीति और निर्णय लेने का स्वाभाविक अधिकारी मानती है, जबकि स्त्रियों को केवल घर सँभालने, सजने-संवरने और पुरुषों की अधीनता स्वीकार करने वाली एक मूक वस्तु समझती है. यह दृष्टिकोण स्त्रियों को मानवीय अधिकारों से वंचित कर समाज को पतन की ओर ले जाता है।

प्रश्न 2. एकांकी में उमा अपने अधिकार और विचार खुलकर व्यक्त करती है। इससे उमा के व्यक्तित्व के विषय में क्या-क्या पता चलता है? आपके विचार से उसके व्यक्तित्व में ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी?

- **उत्तर:** इससे उमा के व्यक्तित्व की निम्नलिखित अनूठी विशेषताएँ प्रकट होती हैं:
    1. वह एक **स्वाभिमानी, साहसी और स्पष्टवक्ता** लड़की है जो अन्याय के सामने चुप रहना स्वीकार नहीं करती.
    2. वह **तार्किक और प्रगतिशील** है, जो विवाह के नाम पर लड़कियों के वस्तुकरण (खरीद-बिक्री) का पुरज़ोर खंडन करती है.
    - **ये विशेषताएँ आने के मुख्य कारण:** उमा के व्यक्तित्व में ये गुण उसकी **उच्च शिक्षा (बी.ए. पास होना)** और ज्ञान के कारण आए हैं. शिक्षा ने उसे सही और गलत का अंतर समझाया और उसके भीतर आत्मबल पैदा किया. इसके अतिरिक्त, भले ही उसके पिता ने समाज के डर से उसकी पढ़ाई छिपाई, परंतु उन्होंने उसे संगीत, कला और स्वतंत्र परिवेश देकर उसके व्यक्तित्व को सुदृढ़ होने का पूरा अवसर दिया था.

सृजन

1. एकांकी के अंत में रतन के "बाबूजी, मक्खन..." संवाद की महत्ता

- **उत्तर:** लेखक ने एकांकी का अंत रतन के इस साधारण संवाद से इसलिए किया है ताकि चरम तनाव और गंभीर विद्रोह के ठीक बाद नाटक में एक तीखा **व्यंग्यात्मक और हास्य प्रभाव (Irony)** उत्पन्न किया जा सके. पूरी एकांकी में रामस्वरूप और प्रेमा इस बात के लिए परेशान थे कि लड़के वालों के स्वागत में कोई कमी न रह जाए और ठीक वक्त पर मक्खन आ जाए. परंतु उमा ने अपने सत्य के प्रहार से लड़के वालों के पाखंड को तोड़कर उन्हें भगा दिया. जब सब कुछ समाप्त हो चुका है और रामस्वरूप हताश होकर बैठे हैं, तब रतन का

बिल्कुल अनभिज्ञ होकर "मक्खन" चिल्लाना यह दिखाता है कि समाज की जिन बाहरी चीज़ों (दिखावे और खातिरदारी) के लिए रामस्वरूप अपनी बेटी के स्वाभिमान की बलि दे रहे थे, वे सब अब पूरी तरह निरर्थक और 'चौपट' हो चुकी हैं.

2. पर्दा दोबारा उठने पर अगला कल्पित दृश्य (अनुमान और विस्तार)

(परदा दोबारा उठता है। कमरा थोड़ा अस्त-व्यस्त है। रामस्वरूप दोनों हाथों से अपना सिर पकड़े तख्त पर बैठे हैं। प्रेमा उमा के पास बैठी उसका सिर सहला रही है। रतन कोने में मक्खन की डिब्बी हाथ में लिए चुपचाप खड़ा है।)

रामस्वरूप : (गहरी साँस लेकर) हे भगवान! यह क्या अनर्थ हो गया। सब कुछ मिट्टी में मिल गया। हमारी नाक कट गई समाज में। अब कौन ब्याहेगा उमा से? **प्रेमा :** (दृढ़ स्वर में) अपनी नाक कटने की चिंता छोड़ो जी! आज मुझे अपनी बेटी पर गर्व है। यदि आज वह चुप रहती, तो उस चरित्रहीन लड़के और लालची बूढ़े के चंगुल में फँसकर ज़िंदगी-भर रोती। **उमा :** (सिसकियाँ रोककर, आत्मविश्वास से) बाबू जी, मुझे माफ़ कर दीजिए। मैंने आपके ऊपर तेज़ आवाज़ उठाई, परंतु मैं एक बी.ए. पास लड़की होकर अपनी आत्मा का सौदा नहीं कर सकती थी. मुझे ऐसी गृहस्थी नहीं चाहिए जहाँ मेरा मोल भेड़-बकरियों जैसा हो. मैं स्वयं शिक्षिका बनकर अपने पैरों पर खड़ी होऊँगी और आपका नाम ऊँचा करूँगी। **रामस्वरूप :** (कुछ पल उमा को देखते हैं, उनका चेहरा बदलता है। वे उठकर उमा के सिर पर हाथ रखते हैं) बेटी, मुझे माफ़ कर दो। मैं ही बूढ़ा और डरपोक हो गया था जो तुम्हारी शिक्षा को छिपा रहा था. तुम सचमुच हमारे घर की असली रीढ़ की हड्डी हो। रतन! जा, अब यह मक्खन अंदर रख दे, आज हम सब मिलकर प्रेम की सूखी रोटी खाएँगे। **(रतन मुस्कुराते हुए अंदर जाता है। उमा अपने पिता के गले लग जाती है। पृष्ठभूमि में धीमा संगीत। परदा गिरता है।)**

<u>भाषा से संवाद (व्याकरण खंड)</u>

1. भाषा में मुहावरे: पहचान, अर्थ एवं वाक्य प्रयोग (पृष्ठ 118)

क्रम	एकांकी का वाक्य	रेखांकित मुहावरा	मुहावरे का सरल अर्थ	नया प्रांजल वाक्य प्रयोग
1	"उनके पीछे-पीछे **भीगी बिल्ली** की तरह रतन आ रहा है..."	**भीगी बिल्ली बनना**	डर के मारे सहम जाना या विवश होना।	"कक्षा में गृहकार्य न करने पर शरारती छात्र शिक्षक को सामने देखकर *भीगी बिल्ली बन गया*।"
2	"लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो **मुँह फुलाए** पड़ी है।"	**मुँह फुलाना**	रूठ जाना या असंतोष प्रकट करना।	"जन्मदिन पर मनपसंद खिलौना न मिलने के कारण छोटी बच्ची सुबह से *मुँह फुलाए* बैठी है।"
3	"और तुम उसकी माँ, **किस मर्ज की दवा** हो?"	**किस मर्ज की दवा होना**	किसी समस्या के समाधान में काम न आना (व्यंग्य)।	"यदि तुम मुसीबत के समय अपने मित्र की सहायता नहीं कर सकते, तो तुम *किस मर्ज की दवा हो*?"
4	"तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना **सिर चढ़ा रखा** है।"	**सिर चढ़ाना**	अत्यधिक लाड़-प्यार देकर बिगाड़ देना या ढीठ बनाना।	"इकलौते बेटे की हर ज़िद पूरी करके माता-पिता ने उसे *सिर चढ़ा रखा है*"

5	"मगर तुम तो अभी से सब-कुछ **उगले देती** हो।"	**उगल देना**	किसी गुप्त भेद या छिपी हुई बात को प्रकट कर देना।	"पुलिस की थोड़ी सी कड़ाई के सामने ही चोर ने चोरी का सारा सामान कहाँ है, *उगल दिया*।"
6	"यह लीजिए, आप तो मुझे **काँटों में घसीटने** लगे।"	**काँटों में घसीटना**	किसी को अत्यधिक असमंजस, संकट या मुसीबत में डालना।	"सीधे-साधे श्याम को अदालत के चक्कर में फँसाकर तुमने उसे *काँटों में घसीट लिया*।"
7	"बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी **इज्जत उतारने** के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?"	**इज्जत उतारना**	घोर अपमान करना या बेइज़्ज़त करना।	"भरी सभा में बड़े भाई पर चोरी का झूठा आरोप लगाना साक्षात् उनकी *इज्जत उतारने* जैसा है।"
8	"लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना **मुँह छिपाकर** भागे थे।"	**मुँह छिपाकर भागना**	शर्मिंदगी या कायरता के कारण चुपचाप भाग जाना।	"परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर छात्र सबके सामने से *मुँह छिपाकर भागा*।"

संदर्भ में शब्द: <u>कहावत का सकारात्मक प्रयोग</u>

- **कहावत:** "बाप सेर है तो लड़का सवा सेर"
- **सकारात्मक अर्थ:** जब बेटा अपने पिता के उत्तम गुणों, ज्ञान या कौशल में उनसे भी आगे बढ़कर श्रेष्ठ कार्य करता है।
- **वाक्य प्रयोग:** "पंडित जसराज जी शास्त्रीय संगीत के बहुत बड़े ज्ञाता थे, परंतु उनके पुत्र ने भी संगीत प्रतियोगिता में अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक जीतकर यह सिद्ध कर दिया कि *बाप सेर है तो लड़का सवा सेर*।"

संवाददाता विधा: <u>गतिविधियाँ</u>

1. उमा का विशेष साक्षात्कार (एक संवाददाता के रूप में)

संवाददाता (मैं) : नमस्कार दर्शकों, आज हमारे साथ उपस्थित हैं नारी चेतना की प्रतीक उमा जी, जिन्होंने हाल ही में रूढ़िवादी विवाह व्यवस्था के पाखंड को तोड़ा है. उमा जी, जब गोपालप्रसाद जी आपकी शिक्षा का नाप-तोल कर रहे थे, तो आपके मन में क्या चल रहा था? **उमा :** नमस्कार। उस समय मुझे लग रहा था कि मैं कोई जीती-जागती इंसान नहीं, बल्कि बाज़ार में बिकने वाली कोई बेबस भेड़-बकरी हूँ. शिक्षा पाना मेरा अधिकार है, कोई पाप नहीं. मुझे अपने मान-सम्मान की रक्षा के लिए मुँह खोलना ही था. **संवाददाता :** गोपालप्रसाद जी का आरोप है कि आपने उनके साथ दगा किया और अपनी बी.ए. की पढ़ाई छिपाई. इस पर आपका क्या पक्ष है? **उमा :** दगा मैंने नहीं, बल्कि इस समाज ने हमारे साथ किया है जो लड़कियों को पढ़ाना भी चाहता है लेकिन शादी के बाज़ार में उनकी अक्ल पर ताला देखना चाहता है. चरित्रहीन लड़कों के लिए कम पढ़ी-लिखी लड़की की माँग करना ही सबसे बड़ा पाखंड है. मैं खुश हूँ कि मैं उस रीढ़विहीन घर की बहू बनने से बच गई.

2. उमा के घर से 'सजीव प्रसारण' (Live Reporting Script)

(कैमरा ऑन होता है। पृष्ठभूमि में रामस्वरूप का घर और कोने में रखा हारमोनियम दिखाई दे रहा है। रिपोर्टर हाथ में माइक थामे मुस्तैद खड़ा है।)

रिपोर्टर : नमस्कार इंडिया! मैं इस समय सीधे लमही गाँव के बाबू रामस्वरूप जी के बैठक वाले कमरे से लाइव रिपोर्टिंग कर रहा हूँ. अभी-अभी यहाँ जो घटना घटी है, उसने पूरे मध्यमवर्गीय समाज को हिलाकर रख दिया है। मेरे ठीक पीछे जो दरवाज़ा है, वहीं से कुछ ही मिनट पहले लखनऊ मेडिकल कॉलेज के छात्र शंकर और उनके पिता वकील गोपालप्रसाद अत्यंत अपमानित होकर मुँह छिपाकर बाहर भागे हैं.
दर्शकों, हुआ यह था कि लड़के वाले इस घर की बी.ए. पास बहादुर बेटी उमा को कम पढ़ी-लिखी समझकर उसकी नुमाइश कर रहे थे. परंतु उमा ने अपनी अदम्य साहसी आवाज़ से न केवल अपनी उच्च शिक्षा का प्रमाण दिया, बल्कि शंकर की रीढ़विहीनता और लड़कियों के हॉस्टल के बाहर की आवारागर्दी को सरेआम बेनकाब कर दिया. दृश्य अत्यंत तनावपूर्ण था, गोपालप्रसाद जी गुस्से में काँप रहे थे. इस लाइव प्रसारण के माध्यम से हम समाज को यह संदेश देना चाहते हैं कि अब बेटियाँ चुप नहीं रहेंगी, वे अपने अधिकारों के लिए रीढ़ की हड्डी सीधी करके खड़ी हो चुकी हैं. कैमरा पर्सन रतन के साथ, लमही ब्यूरो।

भाषा संगम: 'मक्खन' शब्द के प्रांतीय रूप

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की समृद्ध भाषाओं में 'मक्खन' को निम्नलिखित सुंदर नामों से पुकारा जाता है, जो हमारी भाषाई विविधता को दर्शाता है:

- **संस्कृत:** नवनीतम्
- **मराठी / कोंकणी:** लोणी
- **गुजराती:** माखण, नवनीत
- **पंजाबी:** मक्खण
- **कश्मीरी:** टॅन्य
- **सिंधी:** मखणु
- **नेपाली / बांग्ला / असमिया / मणिपुरी:** माखन, ननी, माखोन
- **तेलुगु:** वेन्नै
- **तमिल:** वेर्णय्
- **मलयालम:** वेण्ण
- **कन्नड़:** वेण्णे
- **मातृभाषा (हिंदी) में मूल वाक्य का शुद्ध रूप:** "मक्खन वाले की दुकान दूर है।"

Links और References

यदि आप एकांकी विधा की बारीकियों और 'रीढ़ की हड्डी' नाटक के मंचन को दृश्य माध्यम से समझना चाहते हैं, तो पाठ्यपुस्तक के डिजिटल संदर्भ नीचे दिए गए हैं:

- 🔗 **एकांकी विधा की नाट्य संरचना (NCERT):** https://www.youtube.com/watch?v=JKHLpQ4p534 — हिंदी नाटक और एकांकी के विकास व रंगमंच के नियमों को समझने हेतु उपयोगी कली.

- 🔗 **रीढ़ की हड्डी एकांकी का जीवंत मंचन:**
  https://www.youtube.com/watch?v=6T6Tnn3Eglw — छात्रों द्वारा उमा के सशक्त अभिनय और गोपालप्रसाद के दकियानूसी संवादों का प्रभावी ऑडियो-विज़ुअल प्रदर्शन.